कदम मिलाकर चलना होगा

प्र.१) रिक्त स्थानों की पूर्ती करें।

अ) पाँवो के नीचे अंगारे, सिर पर बरसे यदि ज्वालाएँ

आ) पीड़ाओं मे पलना होगा

इ) कदम मिलाकर चलना होगा।

ई) सम्मुख फैला अमर ध्येय पथ।

उ) अरमानों का दलना होगा।

ऊ) कुश काँटों से सज्जित जीवन।

प्र.२) दिए गए शब्दोंके तुकांत शब्द लिखें।

अ) जलना - चलना
आ) पलना - चलना
इ) पथ - अथ
ई) ढलना - चलना
उ) गलना - चलना
ऊ) घटाएं - ज्वालाएँ
ए) दलना - चलना
ऐ) श्लथ - मनोरथ
ओ) जीवन - यौवन
औ) सज्जित - वंचित

प्र.३) समानार्थी शब्द लिखें।

अ) प्रलय - विनाश
आ) बलिदान - कुर्बानी
इ) सम्मुख - सामने (मुख के)
ई) प्रगती - उत्कर्ष
उ) पीड़ा - वेदना
ऊ) कदम - पाव
ए) मस्तक - माथ
ऐ) सुस्मित - हसनेवाला
ओ) घृणा - नफरत
औ) श्रम - मेहनत

प्र.४) जोड़िया लगाएँ।

'अ' गट	'ब' गट
अ) निज हाथों से	१) चलना होगा
आ) उन्नत मस्तक	२) अपना तन-मन
इ) कल कछार में	३) उभरा सीना
ई) कदम मिलाकर	४) बीच धार में
उ) पावस बनकर	५) हँसते - हँसते
ऊ) परहित अर्पित	६) ढलना होगा

कष्टकर हो जाता है।

प्र 2) दिए गए वाक्य सही और गलत है या नही वह लिखें।
अ) हर व्यक्ती को संदेह के नजर से देखा जाता है। सही
आ) हमारे देश में दरिद्रनों की हीन अवस्था दुर करने के लिए कोई कायदा नही है। गलत
इ) भारत के लोग अपनी ही सुख-सुविधा पे ध्यान देने लगे है। सही
ई) दोषों का पर्दाफाश करना बुरी बात है। गलत
उ) स्टेशन पर टिकट बाबु को लेखक ने दस रुपये ही दिए थे। गलत
ऊ) सब लोगों ने मिलकर बस ड्रायव्हर को मारा। गलत
ए) कंडक्टर आते हुए बच्चों के लिए दूध लेकर आया। सही

प्र 3) रिक्त स्थानों की पूर्ती करें।
अ) जो कुछ भी करेगा उसमें लोग दोष खोजने लगे।
आ) क्या यही भारतवर्ष है जिसका सपना तिलक और गांधी ने देखा था?
इ) भारतवर्ष सदा कानून को धर्म के रुप में देखता आया है।
ई) दोषों का पर्दाफाश करना बुरी बात नहीं है।
उ) उसके चेहरे पर विचित्र संतोष की गरिमा थी।
ऊ) मेरे साथ मेरी पत्नी और तीन बच्चे भी थे।

प्र 4) द्वंद्व समास किसे कहते है? व्याख्या लिखे।
यह समास का वह रुप है जिसमे पहला और दुसरा यह दोनो पद प्रधान होते है।

प्र 5) विलोम अर्थवाले शब्द लिखें।
अ) ईमानदार × धोकेबाज
आ) मुर्ख × होशियार
इ) सम्मान × अपमान
ई) विश्वास × अविश्वास
उ) दोष × गुण
ऊ) स्थिर × अस्थिर
ए) संतोष × असंतोष
ऐ) निराश × उत्साही

प्र 6) मेरे बस की यात्रा का अनुभव इस विषय पर निबंध लिखें।
मेरे पापा का तबादला हुआ था। इसिलिए हमने अपना सारा सामान ट्रेम्पो से आगे भेज दिया और हम बस से सफर

करते करते उस गाँव में पहुचने का निर्णय लिया। मैं, माँ, छोटा भाई और पापा हम सब बस से निकल पड़े। मैं और माँ एक जगह और भाई बाजू की सीट पर बैठे थे। मैं खिड़की की बाजू में बैठी थी। ठंडी, ठंडी हवाँए चेहरे पर आ रही थी। बस के सफर में मजा बहोत आ रहा था। मुझे फोटोग्राफी का बहोत शौक है, इसिलिए मैं मेरा कैमरा साथ लेकर चलती हूँ। आज भी वह मेरे साथ ही था।

एक जगह बस आधे घंटे के लिए रुक गई थी। मैं और भाई वहा पर उतर गए। वहासे एक मंदिर दिख रहा था। मंदिर बहोत पुराना था। लेकिन उसका काम एकदम बारीकिसी किया था। माँ पापा को बताकर हम उस मंदिर में चले गए। वहा कि कलाकारी बहुत अच्छी थी। हमने वहाँ की फोटो भी निकाली। राधा-कृष्णा कि मूर्ती तो मनमोहक थी। बहोत देर तक मैं उसे देख रही थी। माँ ने हमे पुकारा तब हम बस से आगे के सफर के लिए निकल पडे।